B.A. (Hons) Part-I
Paper-II
Abnormal Psychology
By- Dr. Ramendra Kumar Singh
Deptt of Psychology
D.K. College, Dumraon
(Buxar), VKSU, Ara

स्थिर व्यामोह (PARANOIA)

स्थिर-व्यामोह एक बड़ा ही घातक एवं संगीन मानसिक रोग है। इससे ग्रस्त रोगियों में व्यामोह (Delusion) की प्रधानता रहती है। इनका व्यामोह स्थाई, सुव्यवस्थित तथा मनगढ़ंत स्वरूप का होता है। ऐसे लोग अपनी मनगढ़ंत बातों को बड़ा तार्किक रूप से प्रस्तुत करते हैं। इनमें सामान्यतः विभ्रम के लक्षण नहीं होते हैं। कालबम ने (1883) ई० में इसे Paranoia नाम से पुकारा। कुछ लोग इसे बौद्धिक-विकृति (Intellect-disorder) भी कहते हैं। DSM IV (1994) में इस विकृति को व्यामोही विकृति (Delusion disorder) कहा गया है। डेनिसन तथा नील (1996) ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है :-

"स्थिर व्यामोह एक ऐसी विकृति है, जिसमें व्यक्ति दृढ़ कपटात्मक व्यामोह या व्यामोही ईर्ष्या से पीड़ित होता है, ऐसे लोग झगड़ालू होते हैं, परन्तु चिंतन विकृति अथवा विभ्रम से मुक्त होते हैं।"

DSM IV (1994) के अनुसार स्थिर व्यामोह के रोगियों की संख्या कम होती है। अस्पताल में भर्ती कुल मानसिक रोगियों में इनकी संख्या मात्र 1% या 2% ही होती है। DSM IV (1996) द्वारा स्थिर व्यामोह से ग्रस्त रोगियों की पहचान के कुछ उपाय बताये गये हैं :-

(i) इस विकृति से ग्रस्त रोगियों में सामान्य जीवन की परिस्थिति से सम्बन्धित व्यामोह होते हैं, जो कम से कम एक माह तक बना रहता है।

(ii) इस रोग से ग्रस्त व्यक्ति में विभ्रम के लक्षण प्रायः नहीं होते हैं। इनमें सुनने एवं देखने जैसी विभ्रम नहीं होता है।

(iii) इसके रोगियों में स्पर्श या सूँघने जैसी विभ्रम कभी-कभी पाया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

(iv) इस विकृति से ग्रस्त व्यक्ति जिद्दी एवं ईर्ष्यालु होते हैं। ऐसे लोग दूसरों को बदनाम करना चाहते हैं।

(v) ऐसे लोग अहंकारी एवं क्रोधी स्वभाव के होते हैं।

(vi) इससे ग्रस्त व्यक्ति में व्यामोह के लक्षणों के अलावे सामान्यतः अन्य कोई विकृति के लक्षण नहीं होते हैं।

(vii) व्यामोह असामान्यता को अगर छोड़ दें तो इनके अन्य बाकी व्यवहार सामान्य होते हैं।

इस प्रकार उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में अगर उसे सरल शब्दों में परिभाषित करना चाहें तो कह सकते हैं कि "व्यामोह एक प्रकार का अतार्किक, अवास्तविक और अयथार्थपूर्ण स्वकल्पित दृढ़ विश्वास है, जो रोगी की विकृत चिंतन प्रक्रिया का सूचक है।"

स्थिर व्यामोह के प्रकार
Types of Paranoid disorder

स्थिर व्यामोह कई प्रकार के होते हैं। व्यामोही स्वरूप के अनुसार इनके लक्षण भी अलग-अलग होते हैं। व्यामोह के कुछ प्रमुख प्रकारों का वर्णन निम्नवत है:—

1.) दमनात्मक व्यामोह (Persecutory Delusion):—

व्यामोह का यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रकार है। इस तरह के व्यामोह से ग्रस्त रोगियों को लगता है कि सारी दुनिया उनके पीछे पड़ी हुई है। उनके खिलाफ साजिश रची जा रही है, अगर कोई भी व्यक्ति बातचीत करता इन्हें दिखाई पड़ता है तो उन्हें लगता है कि उसी के खिलाफ बातचीत हो रही है। सारे लोग मेरा अहित करने वाले हैं। इन्हें लगता है कि उनका इलाज करने वाला डाक्टर उन्हें जहर दे देगा और मार देगा।

(2) धार्मिक व्यामोह (Religious Paranoia) व्यामोह के इस प्रकार से ग्रस्त रोगी को यह दृढ़ विश्वास होता है कि वह देवदूत अथवा ईश्वर का अवतार है। ईश्वर ने उसे एक खास तरह के धर्म प्रचार के लिए भेजा है। वही ऐसा व्यक्ति है जो

Scanned with CamScanner

ईर्ष्या व्यामोह (Jealous Paranoia) :- इस प्रकार के व्यामोह से ग्रस्त व्यक्ति शंकालु एवं ईर्ष्यालु स्वभाव का होता है। इन्हें ऐसा स्थाई विश्वास हो जाता है कि उनका जीवनसाथी अविश्वासी है। किसी दूसरे व्यक्ति के सम्पर्क में रहता है। इससे ग्रस्त व्यक्ति की पत्नी जब पूछती है कि आप बाहर कब जाईएगा और कब वापस लौटिएगा? तो ऐसे लोगों को आशंका होती है कि वह फंसी हुई है। वह झूठे एवं छोटे-छोटे सबूतों को इकट्ठा करने में लगा रहता है। पारिवारिक जीवन तहस-नहस के कागार पर होता है।

विवादात्मक स्थिर व्यामोह (Litigous Paranoia) :- ऐसे लोग अक्सर झूठे मुकदमें में लोगों को फंसाने के फिराक में रहते हैं। उन्हें लगता है कि वही सही है और बाकी लोग गलत हैं। निर्दोष को भी अपना कल्पित शत्रु मान लेते हैं और केश फौजदारी करते रहते हैं। हारने के बाद पुनः अपील करते हैं यनी पूरा समय न्यायालय में चक्कर लगाते बीत जाता है।

सुधारात्मक व्यामोह (Reformatory Paranoia) :- इस प्रकार के पारानोया से ग्रस्त व्यक्ति को लगता है कि संसार का पतन होनेवाला है। समाज का नैतिक, आर्थिक एवं समाजिक दृष्टिकोण से पतन हो रहा है केवल वही एक सच्चा एवं सुधारक व्यक्ति बचगया है। ऐसे लोग अपने को सर्वसुधारक एवं नैतिकता का पुजारी मानते हैं। यदि कोई समझाता है तो उसे ऐसे लोग अपना शत्रु मानने लगते हैं।

कामवासनात्मक व्यामोह (Erotic Paranoia) :- इस श्रेणी को Paranoid व्यक्ति को लगता है कि वह विश्व में सबसे अधिक सुन्दर है। सभी सुन्दरियाँ उनपर मोहित हैं और उनसे विवाह करना चाहती हैं। कभी कभी ऐसे रोगी प्रेम-पत्र भी लिखने लगते हैं. या लड़कियों का पीछा करते चलते हैं। उन्हें लगता है कि वह लड़की उनसे प्यार करती है।

Scanned with CamScanner

(7) रोगात्मक व्यामोह (Hypocondrical Paranoia) :-

इस प्रकार के रोगी को लगता है कि उन्हें कोई असाध्य बीमारी लग गई है। उनका स्वास्थ्य दिन पर दिन गिरता जा रहा है। उसे भूख नहीं लग रही है, कोई दवा काम नहीं कर रही है, डॉ० उसका ठीक से इलाज नहीं कर रहा है। यदि कोई उससे यह कहता है कि आपको कोई रोग नहीं है तो उसे ऐसे लोग अपना दुश्मन समझने लगते हैं। रोगी को लगता है कि वे अब बचने वाले नहीं हैं।

(8) आत्मनिंदा व्यामोह (Delusion of Self-Condemnation)

इस प्रकार के व्यामोह से ग्रस्त व्यक्ति अपने-आप को सभी बुराइयों का जड़ मान बैठता है। वह अपने को पापी, निर्धन, अयोग्य एवं बुद्धिहीन समझता है। अपना जीवन व्यर्थ समझने लगता है और पापभावना से इस प्रकार ग्रस्त होता है कि अपने सम्बन्धियों को कहता है कि उन्हें मार दें। जीने की इच्छा मर गई है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि व्यामोह एक भयानक मानसिक विकृति है जो कई प्रकार की होती है।

व्यामोह के कारण :- मनोवैज्ञानिकों का इस संदर्भ में कहना है कि इस विकृति के लिये Genetic factor का कोई भूमिका नहीं है बल्कि यह Psychological factors तथा Social factors का देन होता है। प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं :-

1. अतिरंजित संवेग (Exaggerated Emotion) :- तीव्र एवं अतिरंजित संवेग की स्थिति में व्यक्ति का प्रत्यक्षीकरण विकृत हो जाता है जिससे व्यक्ति विकृत निर्णय लेता है और उसका विश्वास भी विकृत हो जाता है, जो व्यामोह की उत्पत्ति का कारण बनता है। इसेनाह का लक्षण उत्पन्न होने लगता है और व्यक्ति Paranoid हो जाता है।

2. व्यक्तित्व के प्रकार (Personality type) :- इसके कारणों की व्याख्या करते हुए मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि इसका एक प्रमुख कारण व्यक्तित्व का बनावट भी है, जो व्यक्ति ईर्ष्यालु, संदेही एवं अतिसंवेदनशील होते हैं उनमें ये सारी चीजें लगातार बनी रहती हैं और अतिमहत्वाकांक्षी होते हैं। ये अपने श्रेष्ठता की भावना से

Scanned with CamScanner

से ग्रस्त हो जाते हैं। ऐसे लोग अपनी महानता को प्रदर्शित करने के लिए अपना विचार दूसरों पर थोपते हैं। धीरे-धीरे इनमें कई प्रकार के व्यामोह विकसित हो जाता है। कैमरन भी इस बात को मानते हैं। ये अपना महानता के मद में चूर होकर गंभीर बने रहते हैं, हँसी-मजाक से दूर रहते हैं। इस तरह Paranoid हो जाते हैं।

(3) विफलता एवं हीनभावना (Failure and inferiority feeling) :- जीवन के सामाजिक, आर्थिक एवं वैयक्तिक क्षेत्र में मिली असफलता व्यक्ति के अंदर हीनभावना पैदा करती है। इससे व्यक्ति में आत्मविश्वास एवं जिजीविषा विकसित होता है। श्रेष्ठता की भावना कुंठित हो जाती है। वह असफलता का दोष दूसरों पर मढ़ने लगता है। यह एक तरह की Defence Mechanism का सहारा लेता है। उसे दृढ़ विश्वास होने लगता है कि सभी लोग उसके दुश्मन हैं और हानियाँ पहुँचा रहे हैं, और स्थिर व्यामोह के चंगुल में फँस जाता है।

(4) दोषपूर्ण सीखना एवं विकास (Faulty learning) :- स्मीथ (1970) आदि ने अपने अध्ययनों के आधार पर यह बतलाया कि इस रोग की उत्पत्ति का एक महत्वपूर्ण कारण बचपन में सीखे गये व्यवहार एवं असमायोजी व्यवहारों का विकास भी है। जो लोग बचपन से शर्मीले, जिद्दी, एकांतप्रिय, दण्ड देने पर प्रतिरोध व्यक्त करने वाले होते हैं। ऐसे लोग अपनी शिकायत एवं आलोचना व्यक्त नहीं कर पाने वाले होते हैं। ये अपनी गलतियाँ दूसरों पर आरोपित करना सीख लेते हैं और धीरे धीरे व्यामोह से ग्रस्त हो जाते हैं।

कुछ लोगों की पारिवारिक पृष्ठभूमि ही दोषपूर्ण होते हैं। आडम्बरी व्यामोह को पनपने का अवसर ज्यादा रहता है।

(5) लैंगिक कुसमायोजन :- सम लिंगी कामुकता भी इसके लिए उत्तरदायी है। इस तरह के लैंगिक कुसमायोजन से ग्रस्त व्यक्ति इसका दमन अचेतन में कर लेता है और आत्मदोषारोपण से बचने के लिए Projection का सहारा लेता है।

(6) सामाजिक सम्पर्क का अभाव :- कैमरन आदि का मानना है कि सामाजिक सम्पर्क स्थापित करने की योग्यता का अभाव के कारण व्यक्ति व्यामोही हो जाता है। ऐसे लोग समाज से कटने लगते हैं और अनिश्चितता को गले लगा लेते हैं। सोची एक अपना संसार अलगनिर्माण कर लेता है और उसी में भ्रमण करते रहता है। "कैमरान इसे Pseudo-Community के नाम से पुकारते हैं।

(7) सहोदरों के बीच प्रतिद्वंद्विता :- यदि बच्चों को सहोदरों भाई-बहनों के बीच प्रेम या शत्रुता व्यक्त करने से रोका जाता है तो वे Reaction formation मनोरचना का सहारा लेते हैं। बाद में व्यस्क होने पर Projection

Scanned with CamScanner

के माध्यम से व्यक्त करते हैं और गलत धारणाएँ विकसित कर लेते हैं।

लक्षण स्थिर व्यामोह के लक्षणों का वर्णन अ उनके प्रकार के अनुसार यथास्थान कर किया गया है। इसके बावजूद इस रोग के मैदानिक स्वरूप को समझने के लिये कुछ लक्षणों को समझना आवश्यक है :—

(I) व्यामोह :- इसके रोगी में व्यामोह के लक्षण पाये जाते हैं ऐसे लोगों में मूलतः कण व्यामोह एवं आडम्बरी व्यामोह पाया जाता है।

(II) विभ्रम का अभाव :- स्थिर व्यामोह के रोगियों में विभ्रम (Hallucination) शायद ही कभी देखने को मिलता है। अगर कभी-विभ्रम के लक्षण दिखाई भी पड़ते हैं तो वे श्रव्य विभ्रम या स्पर्श विभ्रम होते हैं।

(III) क्रमबद्ध एवं तार्किक चिंतन :- इससे ग्रस्त व्यक्ति अपने व्यामोह में दृढ़ विश्वास, क्रमबद्धता, आदि को तर्क के आधार पर सिद्ध करना चाहते हैं, जिसके कारण बातचीत बड़े ही सामान्य ढंग से करते हैं।

(IV) चिड़चिड़ापन :- ऐसे लोग Hostile होते हैं। अन्याय एवं दुर्व्यवहार पर बड़ा कड़ा प्रतिक्रिया करते हैं और शंकालु हो जाते हैं।

(V) रक्षात्मक चिंतन :- अपनी गलतियों को दूसरों के मथे मढ़ देते हैं। अपने शक को सही साबित करने के लिए दूसरों की व्यवहारों पर बड़ा ही बारीक नजर रखते हैं।

इनका चिंतन एक खास दिशा में क्रमिक रूप से बढ़ता है।

उपर्युक्त लक्षणों या मैदानिक स्वरूपों के आधार पर इस रोग का निदान या Diagnosis करना सरल हो जाता है

(Treatment) :-

व्यवहार चिकित्सा, व्यवसायिक चिकित्सा, समूह चिकित्सा, साक्षात्कार आदि प्रविधियों के माध्यम से पीड़ित व्यक्ति को चंगा किया जा सकता है।

इसके अलावे इस रोग को गहन अवस्था में प्रवेश कर जाने के बाद उपचार थोड़ा कठिन हो जाता है। इस अवस्था मे पीड़ित व्यक्ति को अस्पताल में दाखिल कर सौहार्दपूर्ण माहौल में मनोचिकित्सक की निगरानी में Medical therapy देकर ठीक किया जा सकता है। इस श्रेणी के रोगियों को मेडिकल चिकित्सा में Insulin therapy, chemichal therapy के अलावे आवश्यकतानुसार Psychotherapeutic techinques का संयुक्त रूप से प्रयोग फायदेमंद होता है।

RKSingh
28/05/2020
डॉ० रमेन्द्र कु० सिंह
मनोविज्ञान विभाग
डी० के० कालेज, डुमराँव,
(बक्सर)।